PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S.K. Singh
Mob.- 9431449951

पक्षता या पक्षधर्मता

→ अनुमान के दो आधार हैं - तार्किक और मनोवैज्ञानिक। व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार है और पक्षता या पक्षधर्मता अनुमान को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

→ अनुमान की वैधता व्याप्ति पर तथा अनुमान की संभाव्यता पक्षता पर आश्रित है। अनुमान तभी निष्फल हो सकता है जब पक्ष अथवा अनुमिति का विषय विद्यमान हो तथा यह तभी प्रमाणिक सिद्ध हो सकता है जब यह व्याप्ति अर्थात हेतु (मध्य पद) तथा साध्य (वृहत् पद) के सार्वकालिक सार्वदेशिक सम्बन्ध पर आधृत हो।

→ सामान्य अर्थ में 'पक्ष' के 'धर्म' को 'पक्षता' या 'पक्षधर्मता' कहा गया है। प्रारंभ में कहा जा चुका है कि अनुमान के तीन घटक हैं — (i) हेतु अथवा साधन अथवा लिंग (ii) साध्य तथा (iii) पक्ष। इनमें से पक्षधर्मता का सम्बन्ध 'पक्ष' से है। स्पष्टतः पक्षधर्मता को समझने के लिये 'पक्ष' को समझना अनिवार्य है।

→ 'पक्ष' वह है जो निश्चित रूप से साधन और अनिश्चित रूप साध्य को धारण करे। 'पक्ष'

Scanned with CamScanner

विषयक इस अनुमान में पक्ष के विषय में निम्नलिखित तीन बातें स्पष्ट होती है -

(i) पक्ष साधन और साध्य दोनों को धारण करता है, यथा 'पर्वत पर धूम है' तथा 'पर्वत पर अग्नि है'। धूम और अग्नि दोनों का आश्रय होने के कारण 'पर्वत' पक्ष कहलाता है।

(ii) पक्ष में साधन निश्चित रूप से उपस्थित रहता है, यथा- 'पर्वत पर धूम है'- इस ज्ञान में पर्वत पर धूम्र की उपस्थिति का निश्चित ज्ञान व्याप्ति को होता है। अतः यहाँ पर्वत (पक्ष) पर धूम्र (साधन अथवा लिंग) की उपस्थिति निश्चित है।

(iii) पक्ष में साध्य अनिश्चित रूप से उपस्थित होता है। यथा- पर्वत पर धूम्र के देखने से साध्य अग्नि का अनिश्चय वाचक बोध होता है - 'क्या पर्वत पर अग्नि है, अथवा नहीं है?'

→ वास्तुतः पक्ष और सपक्ष में मौलिक भेद यही है कि सपक्ष में साधन और साध्य दोनों निश्चित रूप से उपस्थित रहते हैं किन्तु पक्ष में साधन तो निश्चित रूप से उपस्थित रहता है किन्तु साध्य की उपस्थिति अनिश्चित होती है।

क्रमशः